श्रमण २००६ ०४ (फोल्डर नं. ०२५०५८)

सम्पादक - डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
श्वेताम्बर आगम और दिगम्बर – जस्टिस एम. एल जैन ---------- १-१४
प्राचीन भारत में आर्थिक विचार जैन आगमों के परिप्रेक्ष्य में – कुं. रंजना श्रीवास्तव ---------- १५-१९
जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में सांख्य का विकासवाद – डॉ. सत्यदेव मिश्र ---------- २०-२६
बौद्ध भिक्षु संघ का विकास और नियम – डॉ. कमलेश दूबे ---------- २७-३४
वैदिक और श्रमण परम्परा में अहिंसा – डॉ. रीता अग्रवाल – डॉ. अनीता अग्रवाल ---------- ३५-४५
भारत की अहिंसक संस्कृति – डॉ. ललिता शुक्ला ----------४६-५१
The Role of Ahimsa in Health Care Ethic – Prof. Cromwell Crawford ----------53-70
Medical Ethics in Ancient India – Swami Brhmeshanand ----------71-82
The Jaina Concept of Ahimsa and the Modern World – Prof V. V. Menon ----------83-89
Political Aspect of Non – violence – Dr. B. N. Sinha ----------90-115
जैन जगत ---------- ११६-१२५
साहित्य सत्कार ---------- १२६-१३१
सुरसुन्दरीचरिअं – श्रीमद्धनेश्वर सूरि ---------- १३५-२१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org